Seerate Baba Fareed (Hindi)

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सीरते बाबा फ़रीद

(यौमे उ़र्स : 5 मुहर्रमुल हराम)

सफ़हात 20

- सारी बरकत और रूहानी फ़ैज़ उसी एक दाने में था । 05
- नफ़्अ़ तो आप की नज़रे करम से होगा । 07
- जादूगर की तौबा 10
- फ़रीदुल हक़, हक़ से जा मिले 18

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़लिमय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सीरते बाबा फ़रीद** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

सीरते बाबा फ़रीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला "सीरते बाबा फ़रीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ" पढ़ या सुन ले उस को बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ख़्वाब में ज़ियारत और जन्नतुल फ़िरदौस में रफ़ाक़त इनायत फ़रमा ।
اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा ।

(مُعْجَم اَوسط ج۵ ص۲۵۲ حدیث۷۲۳۵، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नमाज़ी बनाने का अ़जीब त़रीक़ा

एक नेक घराने के शरीफ़ और सआ़दत मन्द बच्चे को बचपन से शकर (शूगर) बहुत पसन्द थी । उस की अम्मीजान ने पहली बार जब उस को नमाज़ की तरग़ीब दी तो फ़रमाया : "बेटा ! नमाज़ पढ़ा करो, इस से **अल्लाह** पाक राज़ी होता है और इबादत गुज़ार बन्दों को इन्आ़मात से नवाज़ता है । तुम नमाज़ पढ़ोगे तो तुम्हें शकर मिला करेगी ।"

वोह ख़ुश नसीब बच्चा जब नमाज़ अदा करता तो उस की अम्मी जाए नमाज़ के नीचे शकर की एक पुड़िया (Small Packet) रख दिया करतीं। वोह बच्चा पाबन्दी से नमाज़ अदा करता और नमाज़ के बा'द शकर की सूरत में अपनी पसन्दीदा शै को ह़ासिल कर लिया करता था। एक दिन उस की अम्मी मसरूफ़िय्यात के बाइ़स जाए नमाज़ के नीचे शकर रखना भूल गईं। जब बच्चा नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो अम्मी ने पूछा : बेटा ! शकर मिली ? सआ़दत मन्द बेटे ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मुझे हर नमाज़ के बा'द शकर मिल जाती है। येह सुनते ही अम्मीजान रो पड़ीं और इस ग़ैबी मदद पर दिल ही दिल में **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करने लगीं। (महबूबे इलाही, स. 52, फ़रीद बुक स्टॉल, तज़्किरए औलियाए पाकिस्तान, जि. 1, स. 289, शब्बीर बिरादर्ज़, जवाहिरे फ़रीदी, स. 298, मक्तबए बाबा फ़रीद)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं येह सआ़दत मन्द और ख़ुश नसीब नमाज़ी "**बच्चा**" कौन था ? येह मश्हूर वलिय्युल्लाह सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर चिश्ती رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ थे।

तआ़रुफ़

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ 569 या 571 हि. मुत़ाबिक़ 1175 ई. में मुलतान के क़स्बे "खतवाल" में पैदा हुए। (सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 159, ह़याते गन्जे शकर, स. 258, अक्बर बुक सेलर्ज़) आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का अस्ल नाम "मस्ऊ़द" है जब कि "फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर" के लक़ब से मश्हूर हैं, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का सिल्सिलए नसब जन्नती सह़ाबी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ तक पहुंचता है।

गन्जे शकर कहने की वज्ह

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को गन्जे शकर कहने की कई वुजूहात मश्हूर हैं जिन में से दो सुनिये : (1) मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत में है : ह़ज़रत शैख़ फ़रीदुल ह़क़्क़े वद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को एक मरतबा 80 फ़ाक़े हो चुके थे। नफ़्स "अलजूअ़ अलजूअ़" (हाए भूक, हाए भूक) पुकार रहा था, उस के बहलाने के लिये कुछ कंकर (Stone) उठा कर मुंह में डाले। डालते ही शकर (शूगर) हो गए, जो कंकर मुंह में डालते शकर हो जाता इसी वज्ह से आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ "गन्जे शकर" मश्हूर हैं।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 482, मक्तबतुल मदीना)

(2) एक मरतबा कुछ बिज़्नस मेन (ताजिर) ऊंटों पर शकर लादे जा रहे थे। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने पूछा : ऊंटों पर क्या चीज़ है ? एक बिज़्नस मेन कहने लगा : ऊंटों पर नमक (Salt) लदा हुवा है। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : तुम कहते हो तो नमक ही होगा। जब क़ाफ़िला अपने मक़ाम पर पहुंचा और सामान खोला गया तो उस में शकर के बजाए नमक निकला। येह देख कर बिज़्नस मेन (ताजिर) समझ गए कि येह हमारे झूट बोलने की शामत है, लिहाज़ा उलटे क़दम आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : हम से ग़लती हो गई है, मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये, अस्ल में ऊंटों पर नमक नहीं बल्कि शकर थी। येह सुन कर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : तुम कहते हो तो शकर ही होगी, बिज़्नस मेन (ताजिर) ने वापस आ कर देखा तो तमाम नमक शकर में तब्दील हो चुका था। (अख़्बारुल अख़्यार, स. 53 मुलख़्ख़सन, फ़ारूक़ एकेडमी, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 2, स. 116, मक्तबए नबविय्या, गुलज़ारे अबरार मुतर्जम, स. 49 मुलख़्ख़सन, मक्तबए सुलत़ान आ़लमगीर)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नेक मां की बरकतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मां बच्चे के लिये गोया ज़मीन की हैसिय्यत रखती है, लिहाज़ा बीवी के इन्तिख़ाब के सिल्सिले में मर्द को बहुत एह़तियात़ से काम लेना चाहिये कि मां की अच्छी या बुरी आ़दात कल औलाद में भी मुन्तक़िल होंगी। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये चार चीज़ों का ख़याल रखा जाता है : (1) उस का माल (2) ह़सब नसब (3) ह़ुस्नो जमाल और (4) दीन।" फिर फ़रमाया : "तुम्हारा हाथ ख़ाक आलूद हो तुम दीनदार औ़रत के ह़ुसूल की कोशिश करो।" (بخاری ج۳ص۴۲۹ حدیث۵۰۹۰، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी, ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर और ह़ज़रत सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم की दीनी तरबियत अपनी अम्मीजान ही के हाथों हुई। क्यूं कि इन तीनों औलियाए किराम के अब्बूजान बचपन में ही इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे।

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मुलतान शरीफ़ में आमद

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ 18 साल की उ़म्र में मुलतान गए। जहां ह़ज़रत मौलाना मिन्हाजुद्दीन तिरमिज़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के मद्रसे में दाख़िल हो कर क़ुरआनो ह़दीस, फ़िक़्ह व कलाम और दीगर उ़लूमे मुरव्वजा के साथ साथ अ़रबी और फ़ारसी पर भी महारत ह़ासिल की। रोज़ाना एक ख़त्मे क़ुरआन शरीफ़ आप का मा'मूल था। थोड़े ही वक़्त में असातिज़ा की तवज्जोह का मर्कज़ बन गए।

अनार के एक दाने का कमाल

हज़रते सय्यिदुना शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी सोहरवर्दी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ ने आप को एक अनार बतौरे तोहफ़ा अता फ़रमाया। आप رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ रोज़े से थे लिहाज़ा उसे दूसरे साथियों ने खा लिया। बा'दे इफ़्तार आप رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ को अनार के छिलके में एक दाना मिला। आप رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ ने वोह दाना खाया तो ऐसा महसूस हुवा कि रूहानिय्यत की रोशनी से उन का वुजूद जगमगा उठा है। बा'द में जब येह वाक़िआ बाबा फ़रीद رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ ने अपने पीरो मुर्शिद हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी चिश्ती رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ को सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : सारी बरकत और रूहानी फ़ैज़ उसी एक दाने में था। बाक़ी फल में कुछ न था।

(महबूबे इलाही, स. 53, ब तसर्रुफ़)

मैं क्यूं न फ़रीद फ़रीद कहूं, मैं क्यूं न तेरी चौखट चूमूं

है दर तेरा जन्नत का घर, आबाद रहे तेरा पाक पतन

जन्नती दाना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अनार के बारे में येह बात मशहूर है कि हर अनार में एक दाना जन्नती होता है चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन जा'फ़र رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ अपने अब्बूजान से नक़्ल करते हैं कि सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا अनार का एक एक दाना तनावुल फ़रमाते या'नी खा लेते थे, किसी ने इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : मुझे ख़बर मिली है कि ज़मीन में कोई भी अनार का दरख़्त ऐसा नहीं है कि जिसे बारदार (या'नी फल के क़ाबिल) करने के लिये उस में जन्नती अनार से दाना न डाला जाता हो तो हो सकता है येह वोही दाना हो। (حلیۃ الاولیاء ج۱ ص۳۹۸ حدیث۱۱۳۹ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

बरकत का मत़लब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाते वक़्त इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि खाने का ज़र्रा भी ज़ाएअ़ न होने पाए। हो सकता है खाने की सारी बरकत उसी एक लुक़्मे में हो जिसे ज़ाएअ़ कर दिया गया है। ह़दीसे पाक में है **: तुम नहीं जानते कि खाने के किस ह़िस्से में बरकत है।** (مسلم ص ۱۱۲۳ حدیث ۲۰۳۴، دار ابن حزم بیروت)

ह़ाफ़िज़ क़ाज़ी अबुल फ़ज़्ल इ़याज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** ''तुम नहीं जानते कि खाने के किस ह़िस्से में बरकत है'' इस का ह़क़ीक़ी मा'ना तो **अल्लाह** पाक ही बेहतर जानता है। लेकिन यहां बरकत से मुराद कम खाने का ज़ियादा लोगों को किफ़ायत कर जाना और उस खाने के ज़रीए तक़्वा ह़ासिल होना है। जब कि बरकत की अस्ल तो किसी चीज़ का ज़ियादा हो जाना और उस में वुस्अ़त (या'नी कुशादगी) का पैदा हो जाना है। (اکمال المعلم ج ۶ ص ۵۰۱ تحت الحدیث ۲۰۳۲، دار الوفاء بیروت)

बरतन धो कर पीने के त़िब्बी फ़वाइद

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कोई सुन्नत ख़ाली अज़ ह़िक्मत नहीं। जदीद साइन्स भी अब ए'तिराफ़ करती है कि विटामिन्ज़ ख़ुसूसन **''विटामिन बी कॉम्पलेक्स''** खाने के ऊपरी ह़िस्से में कम और बरतन के पेंदे (या'नी तह) में ज़ियादा होते हैं नीज़ ग़िज़ा में मौजूद मा'दिनी नमकियात सिर्फ़ पेंदे ही में होते हैं जो कि बरतन को चाटने या धो कर पी लेने से कई अमराज़ के इन्सिदाद या'नी रोकथाम का बाइ़स बनते हैं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 278, मक्तबतुल मदीना)

(खाना खाने की सुन्नतें और आदाब सीखने के लिये अमीरे अहले सुन्नत

دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की किताब ''आदाबे त़आ़म'' और रिसाला ''खाने का इस्लामी त़रीक़ा'' का मुत़ालआ़ कीजिये ।)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मुरीद होने का वाक़िआ़

ऐ आ़शिक़ाने बाबा फ़रीद ! दौराने त़ालिबे इ़ल्मी ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और क़िब्ला रुख़ (या'नी का'बे शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के) बैठ कर अपने अस्बाक़ (Lesson) याद किया करते थे । एक मरतबा सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रत क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मुलतान में इसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये तशरीफ़ लाए । ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ह़स्बे आ़दत मुत़ालए़ में मसरूफ़ थे कि एक ख़ुश गवार एह़सास ने आप को नज़र उठाने पर मजबूर कर दिया । नज़र उठने की देर थी कि एक वलिय्ये कामिल के रोशन और नूरानी चेहरे की ज़ियारत से आंखें ठन्डी होने लगीं चुनान्चे बे इख़्तियार एह़तिरामन खड़े हुए और क़रीब आ कर दो ज़ानू बैठ गए । ह़ज़रत क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने तह़य्युत़ुल मस्जिद से फ़ारिग़ हो कर पूछा : क्या पढ़ रहे हो ? अ़र्ज़ की : फ़िक़्ह की किताब ''अन्नाफ़ेअ़'' है, फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि इस किताब से नफ़्अ़ होगा ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! नफ़्अ़ तो आप की नज़रे करम से होगा । जवाब सुन कर ह़ज़रत क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बहुत ख़ुश हुए और शफ़्क़त फ़रमाते हुए आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को अपने मुरीदों में शामिल फ़रमा लिया । जब ह़ज़रत क़ुत़्बुद्दीन बख़्तयार काकी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मुलतान शरीफ़ से रवाना हुए तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ भी पीछे पीछे चलने लगे येह देख

कर ह़ज़रत क़ुत्बुद्दीन बख़्तयार काकी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : पहले ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल करो फिर मेरे पास देहली आना क्यूं कि बे इ़ल्म ज़ाहिद शैत़ान का मस्ख़रा होता है । (सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 121, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 2, स. 110 मुलख़्ख़सन) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना बहुत अफ़्ज़ल इ़बादत है । इ़ल्म की रोशनी से जहालत और गुमराही के अंधेरों से नजात मिलती है । ह़दीसे पाक में है : जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबुल इ़ल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीनो आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करती हैं और आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़लमा वारिसे अम्बिया हैं । (ابن ماجہ ج۱ص۱۴۵حدیث۲۲۳،دارالمعرفۃ بیروت)

ऐ आ़शिक़ाने बाबा फ़रीद ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बेहतरीन ज़राएअ़ में से "आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतें सीखने के लिये मदनी क़ाफ़िले" में सफ़र करना और मक्तबतुल मदीना के कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करना भी है । आइये ! दा'वते इस्लामी की एक "**मदनी बहार**" सुनते हैं : एक नौ जवान इस्लामी भाई बहुत फ़ेशन पसन्द थे, जब

भी मार्केट में नए फ़ेशन की पेन्ट शर्ट आती येह ख़रीद लिया करते। दुन्या की मस्ती में ऐसे गुम थे कि इन का नमाज़ पढ़ने को जी नहीं चाहता था, इन की वालिदा फ़ज्र की नमाज़ के लिये जगातीं तो ''कल से पढ़ूंगा, इस जुमुआ़ से नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ करूंगा'' वग़ैरा कह कर टाल दिया करते। इन के बड़े भाई जो कॉलेज में पढ़ते थे, वोह ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए जिस के असरात घर तक भी पहुंचे। बड़े भाई एक दिन सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापस लौटे तो मक्तबतुल मदीना के चन्द रसाइल लेते आए, जब छोटे भाई ने येह रसाइल पढ़े तो इन का दिल चोट खा गया कि अब मुझे भी दा'वते इस्लामी वाला बनना है। चुनान्चे येह भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुए जहां इन्हों ने बयान ''काले बिच्छू'' सुना। इन्हों ने रो रो कर तौबा की और दाढ़ी शरीफ़ चेहरे पर सजाना शुरूअ़ कर दी। येह ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के मुरीद भी बने और दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते करते दर्से निज़ामी में दाख़िला भी लिया और ''वुकला मजलिस'' के सूबाई ज़िम्मेदार भी बने। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 97, मक्तबतुल मदीना)

इल्म ह़ासिल करो, जह्ल ज़ाइल करो पाओगे राह़तें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शैत़ान क़ाबू न पा सकेगा

ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ जब बग़दाद ह़ाज़िर हुए तो पन्दरह दिन ह़ज़रते सय्यिदुना शहाबुद्दीन उ़मर सोह्रवर्दी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की सोह़बते बा बरकत में रहे जब वहां से रुख़्सत होने लगे तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपने हाथ से लिखी हुई किताब ''अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़''

अ़ता फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : शैत़ान तुम पर क़ाबू न पा सकेगा।

(अन्वारुल फ़रीद, स. 326)

शोहरत और नामो नुमूद से नफ़रत

ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ एक मरतबा देहली में मौलाना बदरुद्दीन ग़ज़नवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के यहां बयान फ़रमाने तशरीफ़ ले गए लेकिन जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का तआ़रुफ़ चन्द ता'रीफ़ी कलिमात से करवाया गया तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़ौरन वहां से वापस तशरीफ़ ले आए और फिर कभी उन के बयान की मह़फ़िल में तशरीफ़ न ले गए।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो

कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78, मक्तबतुल मदीना)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जादूगर से नजात

ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पाक पतन शरीफ़ रहने के शुरूअ़ के दिनों का वाक़िआ़ है कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ जंगल में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक बूढ़ी औ़रत सर पर दूध की हांडी (Pot) लिये गुज़री। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने पूछा : अम्मां कहां से आ रही हो ? कहां जा रही हो ? सर पर क्या है ? उस ने रोते हुए कहा : ऐ **अल्लाह** के नेक बन्दे ! इस क़स्बे (Town) में एक जादूगर है जो ग़रीबों पर ज़ुल्म करता है। जो उस की बात न माने तो उस को परेशान कर के शदीद नुक़्सान पहुंचाता है। जिस से जो चाहता है अपने साथियों से मंगवाता है कोई इन्कार नहीं

कर सकता। येह दूध उसी के हुक्म पर ले जा रही हूं। अगर न जाऊंगी तो मेरे घर पर जो दूध है सब अभी ख़ून हो जाएगा। इस गुफ़्तगू की वज्ह से जो देर हो गई है मा'लूम नहीं इस की क्या सज़ा मिलेगी। जादूगर के ज़ुल्म की कहानी सुन कर आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उस ख़ातून को तसल्ली देते हुए फ़रमाया : बैठ जाइये ! घबराने की ज़रूरत नहीं, येह सारा दूध ख़ुशी से फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दीजिये, आप का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इसी दौरान जादूगर का एक साथी वहां पहुंचा और उस ने बूढ़ी औ़रत को डांटना चाहा। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उस की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : ख़ामोशी से बैठ जा। वोह जूंही बैठा उस की ज़बान बन्द हो गई। इतने में दूसरा साथी आ पहुंचा। वोह भी ख़ामोश बैठ गया। इसी त़रह़ उस के सारे साथी आते गए और बैठते गए। अगर कोई उठना चाहता तो उठ न पाता। इतने में जादूगर भी वहां आ पहुंचा। अपने शागिर्दों की बे बसी देख कर आग बगूला (Extremely angry) हो गया और जादू के ज़रीए़ उन्हें छुड़ाने की कोशिश करने लगा मगर कुछ न कर सका। जब उस का कोई जादू न चल सका तो बिल आख़िर मजबूर हो कर आ़जिज़ी से कहने लगा : ह़ज़रत ! मेरे शागिर्दों को छोड़ दीजिये। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : एक शर्त़ पर रिहाई होगी, तू इस शह्र से चला जा और कभी ऐसी ज़ालिमाना ह़रकतों का इरादा भी न करना। जादूगर ने शर्त़ मान ली और उसी वक़्त सारा सामान ले कर पाक पतन शरीफ़ से चला गया। इस त़रह़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की करामत से जादूगर के ज़ुल्मो सितम से पाक पतन शरीफ़ के रहने वालों को नजात मिली।

(सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 190 मुलख़्ख़सन, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 2, स. 119, मह़बूबे इलाही, स. 61 वग़ैरा ब तग़य्युर)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सज्दों की कसरत

ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ पर बा'ज़ अवक़ात ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी होती कि आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ एक एक दिन में हज़ार हज़ार सज्दे फ़रमाते । (हिश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 497 मुलख़्ख़सन शब्बीर बिरादर्ज़) ख़ुद भी निहायत सख़्ती से जमाअ़त की पाबन्दी फ़रमाते और अपने मुरीदों को भी बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की तल्क़ीन व नसीह़त फ़रमाया करते ।

(अन्वारुल फ़रीद स. 349 ता 351 मुलख़्ख़सन)

चार चीज़ें

ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने एक मरतबा इर्शाद फ़रमाया : जो आदमी चार चीज़ों से भागता है उस से चार चीज़ें दूर कर दी जाती हैं : जो ज़कात नहीं देता उसे माल से मह़रूम कर दिया जाता है। जो सदक़ा और क़ुरबानी नहीं करता उस से आराम छीन लिया जाता है। जो नमाज़ नहीं पढ़ता मरते वक़्त उस का ईमान छीन लिया जाता है और जो दुआ़ नहीं करता **अल्लाह** पाक उस की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता । (हिश्त बिहिश्त, राह़तुल क़ुलूब, स. 220 मुलख़्ख़सन)

मैं जोड़ने वाला हूं

एक मरतबा ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में एक मह़ब्बत करने वाले ने बत़ौरे तोह़फ़ा क़ैंची पेश की तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने समझाने के लिये इर्शाद फ़रमाया : **मुझे क़ैंची न दो, मैं काटने वाला नहीं बल्कि मुझे सूई दो कि मैं जोड़ने वालों में से हूं।**

(बाबा फ़रीद गन्जे शकर, स. 51)

हाथ चूमने की बरकत

एक मरतबा दौराने बयान ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : बहुत सारे गुनाहगार क़ियामत के दिन बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم के मुबारक हाथ चूमने की बरकत से बख़्शे जाएंगे और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात ह़ासिल करेंगे। फिर इर्शाद फ़रमाया : एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को उन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : दुन्या का हर मुआ़मला अच्छा और बुरा मेरे आगे रख दिया, बात यहां तक पहुंच गई कि हुक्म हुवा : इसे दोज़ख़ में ले जाओ, इस हुक्म पर अ़मल होने ही वाला था कि फ़रमान हुवा : ठहरो ! एक दफ़्आ़ इस ने जामेए़ दिमश्क़ में ह़ज़रत ख़्वाजा सय्यिद शरीफ़ ज़न्दानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के हाथ मुबारक को चूमा था। इस हाथ चूमने की बरकत से हम ने इसे मुआ़फ़ किया।

(हिश्त बिहिश्त मुतर्जम, असरारुल औलिया, स. 382 ब तसर्रुफ़)

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! इन **अल्लाह** वालों की पाकीज़ा और बा बरकत सोह़बत के क्या कहने कि जिस की बरकत से न सिर्फ़ दुन्या निखरती है बल्कि आख़िरत भी संवर जाती है। **अल्लाह** पाक हमें अपने औलियाए किराम के ख़ास फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए।

अमीरे अहले सुन्नत के हाथों पर एक Atheist (दह्रिये) का क़बूले इस्लाम

1406 हि. में अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू

बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी दौरे पर थे कि एक दह्रिया (Atheist) आप से मिलने के लिये आया। वोह अपने अ़क़ाइदो नज़रिय्यात में बहुत मज़बूत़ दिखाई देता था लिहाज़ा बह़सो मुबाह़से के बजाए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस उम्मीद पर उसे काफ़ी मह़ब्बतो शफ़्क़त से नवाज़ा कि हो सकता है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर वोह अपने झूटे मज़हब से तौबा कर ले। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को पाक पतन शरीफ़ में मुन्अ़क़िद होने वाली मह़फ़िल में बयान करना था, लिहाज़ा वोह भी आप के साथ चलने के लिये तय्यार हो गया। ब ज़रीअ़ए बस पाक पतन शरीफ़ पहुंचने के बा'द आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दी। वोह दह्रिया (ग़ैर मुस्लिम) भी आप के साथ था। रात के वक़्त मह़फ़िल में आप ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ करवाई, ह़ाज़िरीन फूट फूट कर रो रहे थे। दौराने दुआ़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रो रो कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में उस की हिदायत के लिये दुआ़ की। जब दुआ़ ख़त्म हुई तो उस दह्रिये ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बड़ी अ़क़ीदत का मुज़ाहरा करते हुए अ़र्ज़ की : दौराने दुआ़ एक अन्जाने ख़ौफ़ के सबब मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए, अब मैं ने तौबा कर ली है। फिर उस ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुबारक हाथ पर दह्रिय्यत से तौबा की और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ग़ुलामी का पट्टा भी अपने गले में डाल लिया।

(इन्फ़िरादी कोशिश, स. 101, मक्तबतुल मदीना)

इत्तिबाए़ शरीअ़त की तल्क़ीन

ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अपने ख़ुलफ़ा और मुरीदीन को वक़्तन फ़ वक़्तन शरीअ़त की पाबन्दी की तल्क़ीन फ़रमाया करते थे कि अपनी ज़बान और हाथ से किसी को मत सताना, न किसी को बुरा भला कहना, अपने ज़ाहिर को महफ़ूज़ रखना, आंख और ज़बान की हिफ़ाज़त करना और इन्हें रिज़ाए इलाही में मसरूफ़ रखना, यादे इलाही को दिल में बसाए रखना, ज़िक्रो तिलावत से हमेशा अपनी ज़बान तर रखना और शैत़ानी वस्वसों से दिल को बचाए रखना।

(शहन्शाहे विलायत ह़ज़रत गन्जे शकर, स. 31 ब तग़य्युर)

ऐ आ़शिक़ाने बाबा फ़रीद ! ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अपने चाहने वालों और मुरीदों को जिन नेक कामों की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाते थे اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! येह और इन जैसे कई नेक काम हैं जो इस दौर में अमीरे अहले सुन्नत ने मदनी इन्आ़मात के अन्दर लिख कर इस उम्मत को एक अ़ज़ीमुश्शान तोह़फ़े की सूरत में अ़त़ा फ़रमाए हैं।

रोज़ाना अपना मुह़ासबा कर के हर इस्लामी महीने की पहली तारीख़ को अपना मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

जेड़ा रस्ता नबियां वलियां दा ओ रस्ता मेरे मुर्शिद दा
उस रस्ते ते मेरा वी पैर होवे मेरे पीर दी हर दम ख़ैर होवे

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आदाबे ज़िन्दगी

ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हमेशा दो ज़ानू ही बैठा करते थे, अगर थक जाते या कुछ तक्लीफ़ होती तो दोनों घुटने खड़े कर के पिंडलियों के गिर्द दोनों हाथों का ह़ल्क़ा बना कर एक हाथ से दूसरा हाथ थाम लेते और सरे मुबारक घुटनों पर रख लेते, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ साफ़ सुथरा रहना पसन्द फ़रमाया करते थे येही वज्ह थी कि हर रोज़ ग़ुस्ल करना आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के मा'मूलात में शामिल था।

(अन्वारुल फ़रीद, स. 139 मुलख़्ख़सन वग़ैरा)

मेरी हर हर अदा से या नबी सुन्नत झलक्ती हो
जिधर जाऊं शहा ख़ुश्बू वहां तेरी महक्ती हो

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इबादात

ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इशा की नमाज़ पढ़ कर तमाम रात इबादत में मश्ग़ूल रहते थे, रमज़ानुल मुबारक में रोज़ाना रात को दो क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमाया करते।

(हिश्त बिहिश्त मुतर्जम, अफ़्ज़लुल फ़वाइद, स. 645)

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ तह़दीसे ने'मत (या'नी **अल्लाह** पाक की ने'मत को मश्हूर करने की निय्यत से) ख़ुद इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं 30 साल तक इस क़दर मुजाहदात में मश्ग़ूल रहा कि न दिन को दिन समझा, न रात को रात, दिन भर तिलावते क़ुरआन से अपनी ज़बान तर रखता जब कि रात भर बारगाहे इलाही में दुआ करता और नवाफ़िल व इबादत में मसरूफ़ रहता था। (सवानेह़े बाबा फ़रीद गन्जे शकर, स. 38 मुलख़्ख़सन)

तिलावत का जज़्बा अ़ता कर इलाही

मुआ़फ़ फ़रमा मेरी ख़त़ा हर इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दिल की बात जान ली

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शुरूअ़ में सौमे दावूदी (या'नी एक दिन छोड़ कर रोज़ा) रखा करते थे, एक दिन ह़ज़रते शैख़ अ़ली मेरठी बाबा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए, खाना खाते वक़्त दिल में ख़याल आया अगर ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) रोज़ाना रोज़ा रखते तो कितना अच्छा होता, ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने नूरे बात़िनी से येह बात जान ली, लिहाज़ा फ़रमाया : आज से अ़ह्द करता हूं कि हमेशा रोज़ा रखा करूंगा, फिर अपने इस वा'दे पर आख़िरी उ़म्र तक क़ाइम भी रहे । (सवानेहे़ बाबा फ़रीद गन्जे शकर, स. 39, ख़ज़ीनए इ़ल्मो अदब)

अह़कामे शर्अ़ पर मुझे दे दे अ़मल का शौक़

पैकर ख़ुलूस का बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

त़रीक़ए बैअ़त

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नेकी की दा'वत का अन्दाज़ दीनी तरबियत से होता था, शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी ज़रा बरदाश्त न करते, अरकाने इस्लाम की पाबन्दी पर बहुत ज़ोर देते और मुरीद करते वक़्त हर एक से येह वा'दा लिया करते कि ''मैं **अल्लाह** पाक से अ़ह्द करता हूं कि अपने हाथ, पाउं और आंखों को ख़िलाफ़े शर्अ़ बातों से बचाऊंगा और अह़कामे शरीअ़त बजा लाऊंगा । اِنْ شَآءَ الله'' (ह़याते गन्जे शकर, स. 476)

सज्दे की ह़ालत में इन्तिक़ाल शरीफ़

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 663 हि. मुत़ाबिक़ मई 1265 ई. में ह़ज़रत बाबा फ़रीद गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार की। शदीद तक्लीफ़ में भी आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नमाज़े बा जमाअ़त ही अदा करते रहे। 4 मुह़र्रमुल ह़राम को सुब्ह़ से ही क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते हुए पांच मरतबा ख़त्मे क़ुरआन फ़रमाया, 5 मुह़र्रमुल ह़राम 664 हि. मुत़ाबिक़ 17 अक्तूबर 1265 ई. को सुब्ह़ से दस बजे तक पांच मरतबा क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाई इस के बा'द ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल हो गए। कुछ देर बा'द आप के कमरे से आवाज़ आई कि अब दोस्त का दोस्त से मिलने का वक़्त क़रीब आ गया है, लोग अन्दर आ गए। इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर ग़शी त़ारी हो गई, होश आया तो पूछा : क्या इशा की नमाज़ पढ़ चुका हूं? अ़र्ज़ की गई : जी हां, फिर दो नफ़्ल की निय्यत बांध ली, पहली रक्अ़त के सज्दे में आप की रूह़ जिस्म से जुदा हो गई। फिर येह आवाज़ आई जिसे सब लोगों ने सुना कि रूए ज़मीन पर अमानत थी सो **अल्लाह** के सिपुर्द हुई। इन्तिक़ाल शरीफ़ की ख़बर फैली तो एक शोर मच गया, इतने लोग जम्अ़ हुए कि नमाज़े जनाज़ा का इन्तिज़ाम शह्र से बाहर करना पड़ा। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़लीफ़ा मौलाना बदरुद्दीन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर जनाज़ा शह्र में लाया गया।

फ़रीदुल ह़क़, ह़क़ से जा मिले

ह़ज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस रात ह़ज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल

शरीफ़ हुवा, एक बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में देखा कि आस्मान के दरवाज़े खुले हैं और येह आवाज़ आ रही है : ''ख़्वाजा फ़रीदुल ह़क़, ह़क़ से जा मिले और **अल्लाह** पाक आप से ख़ुश है ।'' **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हो ख़ैर ग़रीब नवाज़ी की, भरो झोली ग़रीब नियाज़ी की

होती हैं यहीं मंगतों की गुज़र, आबाद रहे तेरा पाक पतन

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	जादूगर से नजात	10
नमाज़ी बनाने का अ़जीब त़रीक़ा	1	सज्दों की कसरत	12
तआ़रुफ़	2	चार चीज़ें	12
गन्जे शकर कहने की वज्ह	3	मैं जोड़ने वाला हूं	12
नेक मां की बरकतें	4	हाथ चूमने की बरकत	13
मुलतान शरीफ़ में आमद	4	अमीरे अहले सुन्नत के हाथों पर एक दहरिये का क़बूले इस्लाम	13
अनार के एक दाने का कमाल	5		
जन्नती दाना	5	इत्तिबाए़ शरीअ़त की तल्क़ीन	15
बरकत का मत़लब	6	आदाबे ज़िन्दगी	16
बरतन धो कर पीने के तिब्बी फ़वाइद	6	इ़बादात	16
		दिल की बात जान ली	17
मुरीद होने का वाक़िआ़	7	त़रीक़ए बैअ़त	17
शैत़ान क़ाबू न पा सकेगा	9	सज्दे की ह़ालत में इन्तिक़ाल शरीफ़	18
शोहरत और नामो नुमूद से नफ़्रत	10	फ़रीदुल ह़क़, ह़क़ से जा मिले	18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के अक़्वाल

- गुनाह कर के शैख़ी बघारना (या'नी ख़ुश होना) सख़्त मा'यूब है।
- "दीन" का कोई मुआ़वज़ा नहीं हो सकता।
- "वक़्त" का कोई बदल नहीं मिल सकता।
- अपने ऐब को हमेशा ज़ेरे नज़र रखो।

(सियरुल औलिया मुतर्जम, स. 141 मुलख़्ख़सन)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net